नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

अवसरों का नया द्वार

भारत और न्यूजीलैंड के बीच हुआ मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) केवल एक व्यापारिक करार नहीं, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत की बढ़ती सक्रियता और रणनीतिक सोच का संकेत है. यह समझौता ऐसे समय में हुआ है जब दुनिया 'सप्लाई चेन विविधीकरण' की ओर बढ़ रही है. ऐसे में भारत का न्यूजीलैंड जैसे विकसित और स्थिर बाजार के साथ जुड़ना कई मायनों में दूरगामी प्रभाव डाल सकता है.

इस समझौते का सबसे बड़ा लाभ भारतीय निर्यातकों को मिलने वाला है. इंजीनियरिंग गुड्स, फार्मा, केमिकल्स, टेक्सटाइल, लेदर और फुटवियर जैसे क्षेत्रों में अब तक 5 से 10 प्रतिशत तक का शुल्क लगता था, जो अब शून्य हो जाएगा. इसका सीधा असर भारतीय उत्पादों की प्रतिस्पर्धात्मकता पर पड़ेगा. खासकर उस बाजार में, जहां चीन पहले से ही शून्य शुल्क के साथ मजबूत स्थिति में है. ऐसे में भारत के लिए यह समझौता 'लेवल प्लेइंग फील्ड' तैयार करता है. न्यूजीलैंड का बाजार भले ही आकार में छोटा हो, लेकिन उसकी क्रय शक्ति और गुणवत्ता के मानक ऊंचे हैं. यही कारण है कि वहां प्रवेश करना आसान नहीं होता. भारत के लिए यह समझौता केवल बाजार तक पहुंच नहीं, बल्कि अपने उत्पादों की गुणवत्ता और वैश्विक मानकों को सुधारने का अवसर भी है. यदि भारतीय उद्योग इस अवसर को गंभीरता से लेते हैं, तो यह एफटीए निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि का माध्यम बन सकता है.

कृषि क्षेत्र में भी इस समझौते के व्यापक प्रभाव दिख सकते हैं. न्यूजीलैंड की उन्नत कृषि तकनीक और उच्च उत्पादकता भारत के लिए सीखने का बड़ा स्रोत है. सेब और किवी जैसे उत्पादों में न्यूजीलैंड की उत्पादकता भारत से कई गुना अधिक है. यदि तकनीकी सहयोग प्रभावी ढंग से लागू होता है, तो भारत में बागवानी क्षेत्र में क्रांति आ सकती है. हालांकि, यहां यह भी ध्यान रखना होगा कि आयात में ढील से घरेलू किसानों पर दबाव न बढ़े. सरकार द्वारा न्यूनतम मूल्य और सीमित कोटा जैसी शर्तें इसी संतुलन को बनाए रखने का प्रयास हैं.

इस समझौते का एक मानवीय और सामाजिक पक्ष भी है. भारतीय युवाओं और पेशेवरों के लिए न्यूजीलैंड में रोजगार और अनुभव के नए अवसर खुलेंगे. हर साल 1000 युवाओं को वीजा और 5000 पेशेवरों के लिए विशेष कोटा न केवल कौशल विकास को बढ़ावा देगा, बल्कि भारत की 'टैलेंट एक्सपोर्ट' नीति को भी मजबूती देगा. शिक्षा और वर्क वीजा में मिलने वाली सहूलियतें भारतीय छात्रों के लिए आकर्षण का केंद्र बन सकती हैं. हालांकि, हर अवसर के साथ चुनौतियां भी आती हैं. भारतीय उद्योग को गुणवत्ता, लागत और समयबद्ध आपूर्ति के मानकों पर खरा उतरना होगा. साथ ही, यह भी सुनिश्चित करना होगा कि छोटे और मझोले उद्योग इस प्रतिस्पर्धा में पीछे न छूटें. कृषि क्षेत्र में संतुलन बनाए रखना और घरेलू हितों की रक्षा करना भी सरकार की बड़ी जिम्मेदारी होगी.

कुल मिलाकर, भारत-न्यूजीलैंड एफटीए एक सकारात्मक और दूरदर्शी कदम है, जो भारत के निर्यात, कृषि, और मानव संसाधन—तीनों क्षेत्रों को नई दिशा दे सकता है. अब असली परीक्षा इसके प्रभावी क्रियान्वयन और उद्योगों की तत्परता की है. यदि सही रणनीति और संतुलन बनाए रखा गया, तो यह समझौता भारत के वैश्विक व्यापारिक सफर में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हो सकता है.

नारंगी अर्थव्यवस्था

जनजातीय कला, हस्तशिल्प और आजीविका

रंजना चोपड़ा

यह भारत के लिए एक मुख्य रणनीतिक सिफारिश को रेखांकित करता है- नारंगी अर्थव्यवस्था में जनजातीय कला/हस्तशिल्प को बेहतर क्षेत्रीय लेखांकन, लागू करने योग्य प्रामाणिकता/नैतिक व्यापार संरचना, और उत्पादक-संचालित वितरण की आवश्यकता है, जो मध्यस्थों के प्रभाव को कम करता हो। लघु-अवधि के लिए भारत ट्राइब्स फेस्ट जैसे त्योहारों को खरीद संभावना तथा उत्पाद कैटलॉग के मानकीकरण और डिजिटलीकरण के रूप में देखा जाना चाहिए एवं राष्ट्रीय एसटी वित्त विकास निगम और पीएम विश्वकर्मा जैसी योजनाओं के माध्यम से ऋण समर्थन को खरीदार आदेशों के साथ एकीकृत किया जाना चाहिए. हालांकि, दीर्घ-अवधि के लिए सरकार को एक जनजातीय रचनात्मक अर्थव्यवस्था उपग्रह विवरण बनाने, निर्यात स्तर की अनुपालन और ब्रांड संरचना स्थापित करने और जनजातीय कला के लिए भारत-उपयुक्त नैतिक व्यापार संहिता तैयार करने पर विचार करना होगा.

वर्शांग खैयर मणिपुर के उखरूल जिले के लॉन्गपी गाँव के निवासी हैं, जो अपने और अपने परिवार की रोजी-रोटी गाँव में उपलब्ध गारे और सर्पेंटीनाइट पत्थर से बर्तन बनाकर कमाते हैं. स्थानीय तांगखुल नागा जनजातियों के अनुसार, यह पारंपरिक शिल्प, देवी पंथोइबी की कृपा है और आज यह उनकी आय का मुख्य स्रोत है और इसने छोटे से गाँव को वैश्विक मानचित्र पर ला दिया है. इसी तरह, नॉर्थी कुट्टन, जो तमिलनाडु के उद्हगमंडलम जिले के पागलकोड मंड गाँव में रहते हैं, पारंपरिक कढ़ाई कला से अपनी आजीविका कमा रहे हैं. इस कढ़ाई कला का उपयोग नीलगिरी के हरे-भरे जंगलों में बसे टोडा जनजाति समूह द्वारा किया जाता है.

जीआईटैग से युक्त यह शिल्प प्रकृति और सामुदायिक बंधन का जश्न मनाता है और इसे बहुत ही सुंदरता के साथ टेबल मैट, रनर, जैकेट आदि पर अंकित किया जाता है और समकालीन उपयोग में इसे लोकप्रियता भी मिली है. खैयर और कुट्टन दोनों अपने पारंपरिक जनजातीय कला रूपों के एक उन्नत रूप का अभ्यास करके सालाना लगभग 6-8 लाख रुपये कमाते हैं.

जनजातीय आजीविका लंबे समय से ज्ञान और पारंपरिक प्रथाओं पर आधारित रही है, जहां रचनात्मकता शिल्प, परंपरा, वस्त्र, संगीत, नृत्य, कथा-वाचन और भाषाओं में निहित है. ये केवल उत्पाद या सेवाएं नहीं हैं, बल्कि ज्ञान की जीवित विरासत हैं, जो पीढ़ियों के माध्यम से आगे ब?ती हैं. जनजातीय समुदायों के पास मौजूद रचनात्मक संपत्तियों का महत्वपूर्ण आर्थिक मूल्य है, जिसे यदि परंपरा के प्रति संवेदनशील रहते हुए सतत तरीके से उपयोग किया जाए, तो यह नारंगी अर्थव्यवस्था (ऑरेंज इकोनॉमी) को गति दे सकता है और इस इकोसिस्टम के तहत आय उत्पन्न करने वाली गतिविधियों का सृजन कर सकता है।

रचनात्मक अर्थव्यवस्था को दर्शाने के लिए व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली नारंगी अर्थव्यवस्था, यूएनसीटीएडी (संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन) के अनुमान के अनुसार 2 ट्रिलियन डॉलर से 2.25 ट्रिलियन डॉलर के बीच है, जो वैश्विक जीडीपी का लगभग 3.1 प्रतिशत है. भारत में, जहाँ हथकरघा और हस्तशिल्प क्षेत्र के लिए ठोस डेटा मौजूद है, वहीं जनजातीय शिल्प और आजीविका के लिए डेटा की कमी है। हालांकि, रणनीतिक निहितार्थ स्पष्ट है- जनजातीय कला और शिल्प कुछ ऐसी ग्रामीण आजीविकाएं हैं, जो वैश्विक रचनात्मक वस्तुएँ की मांग से सीधे जुड़ सकती हैं यदि प्रामाणिकता, लॉजिस्टिक्स और गुणवत्ता प्रणाली मौजूद हों.

अनुमान है कि भारत की अनुसूचित जनजाति की आबादी 104 मिलियन है और कुल आबादी में इसकी हिस्सेदारी लगभग 8.6 प्रतिशत है. लगभग 700 अलग-अलग जनजातीय समुदाय विभिन्न पारिस्थितिक क्षेत्रों में निवास करते हैं-जंगल, पहाड़, मैदान और सीमा क्षेत्र। इस विविधता का प्रत्यक्ष आर्थिक संबंध है। यह पारिस्थितिकी के अनुसार शिल्प विशेषज्ञता को प्रतिबिंबित करता है, जैसे जंगल वाले क्षेत्रों में बांस और छड़ी, खनिज क्षेत्रों में धातु और मिट्टी, और बुनाई गलियारों मां वस्त्र परंपराएँ. इसके परिणामस्वरूप, भारत के जनजातीय क्षेत्र; एकल जनजातीय शिल्प क्षेत्र के बजाय विविध अर्थव्यवस्थाओं से युक्त हैं. इसलिए, नीति निर्माण क्षेत्रीय रूप से भिन्न होना चाहिए और सभी के लिए उपयुक्त एक ही शिल्प योजना नहीं होनी चाहिए। नीतियों को कच्चे माल की सीमाओं, डिज़ाइन और गुणवत्ता संबंधी मुद्दों और बाजार संबंधों को ध्यान में रखना चाहिए. वर्तमान में, जनजातीय कला/हस्तशिल्प आजीविका इकोसिस्टम, कई मंत्रालयों और संस्थानों के कार्यादेशों से बना है, जो विभिन्न स्तरों पर एक-जैसे हैं.

जनजातीय कार्य मंत्रालय इस इकोसिस्टम का मुख्य स्तंभ है और विकास के लिए अत्यंत आवश्यक अवसंरचना में सुधार करता है और ट्राइफेड (भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ लिमिटेड) के माध्यम से बाजार-जुड़ाव की सुविधा देता है. ट्राइफेड एक प्रमुख बाजार संचालक के रूप में कार्य करता है।

(लेखिका जनजातीय कार्य मंत्रालय में सचिव हैं)

दिल्ली डायरी

'मां माटी मानुष' बनाम 'झालमुरी, माछभात और नवका विहार' की राजनीति

प्रवेश कुमार मिश्र

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में आरोप प्रत्यारोप के सभी स्थापित सीमा लांघने के बाद टीएमसी और भाजपा के रणनीतिकारों ने अंत में स्थानीय मुद्दों के सहारे चुनावी बैतरणी पार पाने की तैयारी की है.

टीएमसी ने जहां एक तरफ भाजपाई मुहिम को मां माटी मानुष के अपने भावनात्मक नारों के सहारे बंगाली अस्मिता को जगाने का प्रयास किया है वहीं दूसरी ओर भाजपा की ओर से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा झालमुरी से लेकर नवका विहार के सहारे मतदाताओं को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास किया गया और पार्टी के कई वरिष्ठ नेताओं द्वारा स्थानीय भोजन माछभात का सेवन कर जनता के बीच सार्थक संदेश देने का प्रयास किया गया. हालांकि इन सबके बावजूद जहां पश्चिम बंगाल के प्रथम चरण में बढ़े मत प्रतिशत और मतदाताओं की चुप्पी सभी समीक्षकों को पशोपेश में डाल दिया है वहीं दिल्ली, गुजरात से लेकर अन्य राज्यों के सट्टाबाजारों की अनिश्चितता से सबकी धड़कने बढ़ गई हैं.

आप में बिखराव या आपरेशन लोटस का प्रभाव

कुछ दिन पहले तक भाजपा को पानी पी पी कर ख़री खोटी सुनाते हुए मीडिया की सुर्खियां बटोरने वाले तात्कालिक आप के युवा राज्यसभा सदस्य राघव चड्ढा न सिर्फ अकेले बल्कि अपने साथ छह अन्य पार्टी सांसदों को लेकर जिस तरह से अचानक भाजपा में शामिल हुए उसकी चर्चा दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में खुब सुर्खियों में है. लोग समझ नहीं पा रहे हैं कि चड्ढा पहले सही बोल रहे थे या अब सही बोल रहे हैं. हालांकि उन्होंने कहा है कि उनके लोग कह रहे थे कि सही आदमी गलत जगह है इसलिए मैं सही जगह पर आ गया हूं.

आम आदमी पार्टी के अंदर इस तरह के बिखराव को कुछ लोग आपरेशन लोटस की संज्ञा देते हुए भाजपाई रणनीतिकारों की खूब तारीफ कर रहे हैं जबकि कुछ लोग इसे आप के अंदर अरविंद केजरीवाल के निरंकुश दबाव के खिलाफ आवाज उठने की शुरुआत मान रहे हैं.

मोर्चाबंदी में जुटी भाजपा

तमिलनाडु विधानसभा चुनाव में सत्तारूढ़ डीएमके के खिलाफ कथित माहौल को भांपकर राजग खेमा गदगद है. संभवत: इसी वजह से अभिनेता से राजनेता विजय, जिनकी पार्टी 'तमिलगा वेत्री कड़गम' (टीवीके) जो इस चुनाव में पदार्पण किया है उसपर राजग रणनीतिकारों की नजर है.

वोटर द्वारा बढ़-चढ़कर चुनाव में हिस्सा लेना सत्ता विरोधी लहर की आहट मानी जा रही है. चर्चा है कि भाजपाई रणनीतिकार डीएमके व कांग्रेस को छोड़ बाकी ज्यादातर क्षेत्रीय दलों के नेताओं से संपर्क साधे हुए हैं ताकि मौका मिले तो बगैर देरी किए सभी को एकजुट कर वैकल्पिक सरकार की रूपरेखा तैयार की जा सके.

चुनाव परिणाम पर टिका है इंडिया गठबंधन का भविष्य

लोकसभा चुनाव के पहले विपक्षी दलों को एकजुट रखने के लिए बनाया गया इंडिया गठबंधन का भविष्य पांच राज्यों के चुनाव परिणाम पर टिका हुआ है. दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि तमिलनाडु व पश्चिम बंगाल में यदि डीएमके व टीएमसी सत्ता बचाने में कामयाब हो जाती है तो निश्चित रूप से विपक्षी एकता का यह समूह कुछ बदलाव के साथ पुनर्जीवित हो जाएगा. लेकिन यदि ऐसा नहीं हुआ तो कांग्रेस से अलग हो कर विपक्षी दल एक अलग मोर्चा तैयार कर लेंगे. कहा जा रहा है कि आम आदमी पार्टी द्वारा कांग्रेस व भाजपा के विरोधी खेमे को एकजुट करने के लिए प्रयास आरंभ किया जा चुका है. इस प्रयास को टीएमसी, राजद व सपा जैसे कई दलों के वरिष्ठ नेताओं का प्रत्यक्ष समर्थन मिला हुआ है.

चंद्रशेखर राव को बेटी कविता की चुनौती

किसी नेता को शायद ही उसकी बेटी चुनौती देती है. पं. नेहरू को इंदिरा ने, एम. करुणानिधि को कनिमोझी ने या शरद पवार को सुप्रिया सुले ने हमेशा पूर्ण सम्मान दिया व मदद दी. इस मामले में तेलंगाना के पूर्व मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव की बेटी के. कविता अपवाद हैं. उन्होंने अपनी नई पार्टी तेलंगाना राष्ट्र सेना बना ली है. इस तरह मूल पार्टी टीआरएस के नाम का इस्तेमाल किया है. कविता अपने पिता की पार्टी भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) को चुनौती देंगी. तेलंगाना राज्य निर्माण के लिए के. चंद्रशेखर राव ने 2001 में तेलंगाना राष्ट्र समिति (टीआरएस) की स्थापना की थी और भारी आंदोलन किया था. पार्टी का राष्ट्रीय स्तर पर विस्तार करने के लिए उसका नाम बदलकर भारत राष्ट्र समिति या बीआरएस कर दिया. इस फैसले से तेलंगाना की अस्मिता से भावनात्मक संबंध टूट गया. 2023 के विधानसभा चुनाव में बीआरएस हार गई और राज्य में रेवंत रेड्डी के नेतृत्व में कांग्रेस की सरकार बन गई. सिंचाई परियोजना को लेकर कविता ने अपने चचेरे भाइयों टी. हरीश राव और जे. संतोषकुमार की आलोचना की. इस वजह से उन्हें बीआरएस से निलंबित कर दिया गया था. अब कविता नई पार्टी बनाकर अपने पिता की पार्टी बीआरएस और सत्तारूढ़ कांग्रेस को टक्कर देंगी. बीजेपी की राय है कि कविता के इस कदम का कोई असर नहीं पड़ेगा. राज्य की जनता को उन पर विश्वास नहीं है. दूसरी ओर बीआरएस के नेता श्रावण दासोजू ने कहा कि तेलंगाना निर्माण में के. चंद्रशेखर राव का अमूल्य योगदान है. उनकी आलोचना करने वालों को चाहे उनकी बेटी ही क्यों न हो, जनता कड़ा सबक सिखाएगी. कविता ने अपने पिता की आलोचना करते हुए कहा कि वह अब बदल गए हैं और जनता के प्रश्नों की उपेक्षा करते हैं. जब उन्होंने टीआरएस नाम छोड़ दिया तो कोई भी उस नाम का इस्तेमाल कर सकता है. 2025 में बीआरएस से निलंबित किए जाने के बाद से कविता तेलंगाना जागृति नामक सामाजिक संगठन चला रही थीं. अब वह फिर राजनीति में सक्रिय हो गई हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

परीक्षा हॉल में जनेऊ की अनुमति नहीं आखिर यह रवैया कितना सही!

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, बेंगलुरु के कृपानिधि कॉलेज में सीईटी परीक्षा के दौरान वहां के अधिकारियों ने 5 ब्राह्मण छात्रों के जनेऊ उतरवा लिए. क्या किसी की धार्मिक-सांस्कृतिक आस्था को इस तरह आघात पहुंचाया जाना चाहिए?'

हमने कहा, 'परीक्षा किसी युद्ध से कम नहीं होती. जनेऊ पहनकर रणसंग्राम में नहीं जाते. यह पूजा-पाठ या धार्मिक अनुष्ठान तक ठीक है. मिलिट्री ट्रेनिंग में भी जनेऊ नहीं चलता.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, जनेऊ का मुद्दा परंपरा और वैदिक आस्था से जुड़ा हुआ है. शास्त्रों में ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य को जनेऊ पहनने का अधिकार दिया गया है. जब बच्चा 5 वर्ष की आयु में गुरुकुल पढ़ने जाता था तो उसका उपनयन संस्कार कर जनेऊ पहनाया जाता था और गुरु उसके कान में गायत्री मंत्र फूंकता था. उसे संध्यावंदन करना सिखाया जाता था और 25 वर्ष की आयु तक ब्रम्हचर्य का पालन करने को कहा जाता था.'

हमने कहा, 'समय बदल गया है. अब बच्चे गुरुकुल में नहीं, कॉन्वेंट में जाते हैं और इंग्लिश मीडियम से पढ़ते हैं. खानपान भी बिगड़ गया है. जनेऊधारी भी होटल में जूता पहनकर खाना खाते हैं. प्रतिदिन गायत्री मंत्र जपने की उन्हें फुरसत नहीं है. श्मशान से लौटकर आने के बाद जनेऊ बदलना भूल जाते हैं. टॉयलेट जाते समय कान पर जनेऊ नहीं चढ़ाते. टूटा जनेऊ नहीं बदलते. बताइए, ऐसे में यज्ञोपवीत की शुद्धता कैसे रहेगी? जनेऊ पहनना शौक या दिखावे की चीज नहीं है. जनेऊ के 3 धागे या सूत्र सत्य, शील व सदाचरण के प्रतीक हैं. बात-बात पर झूठ बोलना, दुश्चरित्र होना और भ्रष्टाचार, चोरी या दुराचार करना है तो जनेऊ बिल्कुल नहीं पहनना चाहिए.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, परीक्षा केंद्र के अधिकारियों का कहना था कि छात्र जनेऊ के धागे से खुद को नुकसान पहुंचा सकता है. कहीं पेपर बिगड़ने पर गले में फांसी न लगा ले!'

हमने कहा, 'यह बेवकूफी की बात है. फांसी रस्सी से लगती है. कच्चे धागे से बने जनेऊ से नहीं! वैसे छात्र चाहें तो परीक्षा केंद्र में जनेऊ उतरवाए जाने के बाद घर लौटकर स्नान ध्यान कर नया जनेऊ धारण कर सकते हैं. हिंदू धर्म में कर्मबंधन से मुक्त होने के लिए संन्यासी को शिखा (चोटी) और सूत्र (जनेऊ) त्याग देना पड़ता है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12243 - डॉ. सागर खादीवाला

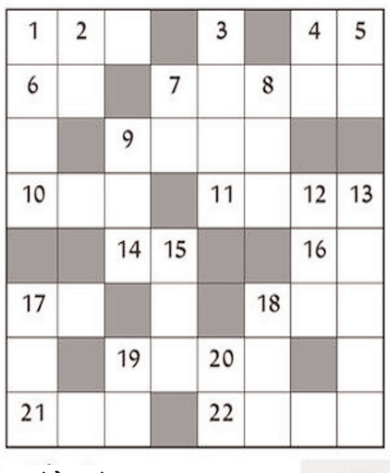

चिपकने का गुण, गोंद 3. विशालकाय 4. स्त्री, पत्नी 5. निषिद्ध, रोक 7. सतह 8. ढंग, उपाय 9. भाग्य, नसीब 12. नहुषराज का पुत्र देवयानी व शर्मिष्ठा का पति 13. कमल की डंडी 15. किसी कार्य का अपनी ओर से प्रारंभ 17. बच्चा, लड़का 18. अंजन 19. चमड़ा, खाल 20. एक मछली

बाएं से दाएं
1. पलटने का कार्य या भाव, प्रतिफल 4. सूर्य, दीप्ति, चमक, क्रोध (सं.) 6. कोप, क्रोध 7. गुस्से में लाल होना 9. अत्यंत हर्षित होने पर निकलने वाली अस्पष्ट ध्वनि 10. जादू, चमत्कार, करामात (उर्दू) 11. अकस्मात, अचानक 14. तपस्या 16. प्रहर 17. भुजा, बांह (सं.) 18. हत्यारा 19. चालाक, धूर्त, छली 21. लेखनी, कूंची (उर्दू) 22 एक बारीक सफेद सूती कपड़ा

ऊपर से नीचे
1. परिणाम, रूपांतर होना (सं.) 2.

Solution 12242

वि	श्वा	स	पा	त्र		दा	ह
पा	न	दा	न		च	म	क
शा		च	क	र			ला
	न	र		ल		टो	ना
प्र	वी	ण		पा	च	क	
जा	न		ब	र	क	रा	र
प	ता	का		खी	रा		ग
ति		ग	श्त		ना	क	ड़ा

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में सामाजिक कार्यों में संलग्नता रहेगी. व्यवसाय में वृद्धि होगी. राजनैतिक लाभ होगा. वर्ष के मध्य में व्यवसाय की स्थिति में सुधार होगा. आय के स्त्रतों में वृद्धि होगी. पूर्व परिचित से भेंट होगीं, कार्यों में सफलता मिलेगी. मन प्रसन्न रहेगा. वर्ष के अन्त में अनावश्यक विवाद से मन खिन्न रह सकता है. स्थान परिवर्तन का योग है.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों के व्यवसाय में वृद्धिहोगी. राजनैतिक लाभ प्राप्त होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को पूर्व परिचित कार्यों मेंसफलता के योग है. कर्क राशि के व्यक्तियों को मनोनुकूल सफलता प्राप्त होने का योग है. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को अधिक परिश्रम होगा. यात्रा में कष्ट होगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को स्थान परिवर्तन का योग है. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को अनावश्यक विवादों से मन द्रवित रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक हंसमुख, मिलनसार, चंचल तथा व्यवहार कुशल होगा, जन्म स्थान से दूर रहकर अपना भाग्योदय करेगा, माता पिता का भक्त होगा, दूर दराज की यात्रा अधिक पसंद करेगा, तेजस्वी और निडर होगा. सर्विस करना पसंद करेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

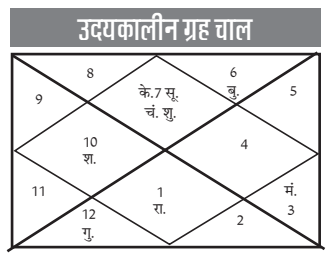

पंचांग

रा.मि. 09 संवत् 2083 वैशाख शुक्ल त्रयोदशी बुधवासरे रात 7/32, हस्त नक्षत्रे रात 12/8, हर्षण योगे रात 9/2, कौलव करणे सू.उ. 5/32, सू.अ. 6/28, चन्द्रचार कन्या, पर्व- प्रदोष व्रत, शु.रा. 6,8,9,12,1,4 अ.रा. 7,10,11,2,3,5 शुभांक- 8,0,5.

व्यापार भविष्य

वैशाख शुक्ल त्रयोदशी को हस्त नक्षत्र के प्रभाव से रूई, कपास, सूत, वस्त्र, सन् मैथी के भाव में सामान्य घट-बढ़ रहेगी, मोठ, मसूर बाजरा, मक्का, मूँगफली, गुड़ तेल, घी, के भाव में तेजी रहेगी, भाग्यांक 2563 है.

मेष- ले देकर कार्य कराने की योजना सफल रहेगी, संतान के कारण भावनात्मक कष्ट होगा, नवीन योजनाओं का विकास होगा, मनोरंजक यात्रा हो सकती है.

वृषभ- लोग दबाव बनाने की कोशिश करेंगे, विवादास्पद मामले सुलझेंगे, सुख सुविधाओं की वृद्धि होगी, महिला जाति की सलाह लेना उपयोगी सिद्ध होगा.

मिथुन- नया घर खरीदने का मन बनेगा, साहसिक प्रयत्न से अभीष्ट कार्यों की प्राप्ति होगी, बने बनाये कार्यों में व्यवधान आ सकता है, नवीन कार्यों की रूपरेखा बनेगी.

कर्क- युवाओं को बेहतर सफलता मिलेगी, आकस्मिक खर्च होगा, कामकाज पूरा होगा, नये कार्य बनने का योग है. नवीन योजना बनेगी.

सिंह- समय पर सोचे कार्य बनने का योग है, मानसिक प्रसन्नता रहेगी, मनोरंजन आदि में व्यय होगा, कामकाज पूरा होगा, मानसिक संतोष बना रहेगा.

कन्या- विशेष श्रम एवं प्रयास से कार्य में सामान्य सफलता मिलेगी, विवादों को न बढ़ायें, प्रतिष्ठा मिलेगी, अनावश्यक व्यय भार बढ़ सकता है.

तुला- नई जिम्मेदारी आने से चिंतित हो सकते हैं, नवीन योजनाओं का शुभारंभ होगा, शोध कार्य में शुभ समाचार मिलेगा, सुख शांति बनी रहेगी.

वृश्चिक- उच्च अध्ययन में अच्छी सफलता के योग हैं, व्यापारिक साझेदारी लाभकारी रहेगी, नौकरी संबंधी प्रयासों में सफलता, राजकीय सहयोग बनेगा.

धनु- कार्यस्थल पर विवाद की संभावना, सत्संग से मानसिक प्रसन्नता एवं श्शांति रहेगी, अचानक कोई सुखद एवं लाभदायक सूचना मिलेगी, प्रवास का योग प्रबल है.

मकर- कानूनी मामले सुलझेंगे, बुजुर्गों के स्वास्थ्य की चिन्ता होगी, अचानक लाभ हो सकता है, यश मिलेगा. शारीरिक शिथिलता दूर होगी.

कुम्भ- समय के साथ तौर तरीके में बदलाव कर लें, मेलजोल बढ़ेगा, व्यवसायिक कामकाज की अधिकता रह सकती है, मनोरंजन के साधन बनेंगे.

मीन- परिचितों को जानबूझकर नाराज न करें, आर्थिक लेनदेन में सावधानी रखें, कार्य की अधिकता से मानसिक पीड़ा होगी, शत्रु वर्ग पराजित होगा.

SUDOKU 7375

4	6		3		8	9		7
	1		9		6		5	4
						8		
	4		5				8	
2		5		4		6		1
	3				1		7	
		3						
5	9		7		2		6	
7		6	4		3		9	2

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7374

5	7	2	3	8	4	1	9	6
8	6	1	9	2	5	7	3	4
3	9	4	1	6	7	5	8	2
2	5	7	4	1	3	8	6	9
4	8	6	5	9	2	3	7	1
1	3	9	6	7	8	4	2	5
6	2	3	7	4	1	9	5	8
9	4	5	8	3	6	2	1	7
7	1	8	2	5	9	6	4	3